शोध सारांश

हिंदी-अवधी काल, पक्ष, वृत्ति : व्यतिरेकी विश्लेषण

[Hindi-Awadhi TAM : Contrastive Analysis]

भाषा वह साधन है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों का आदान प्रदान करता है। इसके लिए हम मूलत: वाचिक ध्वनियों का प्रयोग करते हैं। प्रत्येक भाषा की संरचना अलग-अलग होती है, जिसके कारण वह सभी भाषाओं से अलग दिखाई देती है। कोई भी भाषा कुछ व्याकरणिक नियमों में बँधी होती है जिसे हम भाषा की संरचना कहते हैं। एक भाषा की व्यवस्था का स्वतंत्र अध्ययन के साथ-साथ एक से अधिक भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है। प्रस्तुत लघु-शोध प्रबंध में हिंदी-अवधी के क्रिया पदबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है।

भाषा में संप्रेषण की दृष्टि से वाक्य आधारभूत इकाई है। क्रिया वाक्य का केंद्र होती है। क्रिया रूप से ही वाक्य में अधिकांश व्याकरणिक सूचनाएँ मिलती हैं। क्रिया की संरचना में मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया होते हैं। इनमें मुख्य क्रिया कोशीय अर्थ प्रदान करती है, और इसके साथ जुड़ी हुई सहायक क्रिया के द्वारा व्याकरणिक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। हिंदी और अवधी क्रिया पदबंधों को रूप रचना की दृष्टि से देखने से यह पता चलता है कि इनमें प्रत्येक व्याकरणिक कोटि के लिए अलग-अलग प्रत्यय तथा सहायक क्रियाएँ नहीं जुड़तीं, बल्कि एक दो प्रत्यय ही जुड़ते हैं तथा जो सहायक क्रियाएँ जुड़ती हैं, उनसे ही अधिकांश आवश्यक व्याकरणिक कोटियों का संकेत मिलता है।

अत: हम दोनों भाषाओं की इस भिन्नता को भाषा विज्ञान में ध्वनि, रूप तथा वाक्य के माध्यम से तुलना कर सकते हैं। तुलना के आधार पर दोनों भाषाओं की प्रकृति का ज्ञान मिलता है। सभी भाषाओं की अपनी अलग व्याकरणिक व्यवस्था होती है, जिसमें वह भाषा गठित होती है। व्यतिरेकी विश्लेषण में वाक्य, रूप, ध्वनि आदि के स्तर पर पायी जाने वाली समानताओं तथा असमानताओं की खोज की जाती है। जिससे दोनों भाषाओं को समझने में सहायता मिलती है। इस क्रम में हिंदी-अवधी काल, पक्ष, वृत्ति के साथ-साथ लिंग, वचन, पुरुष आदि की व्यवस्था से देखा जाए तो कहीं समानता तो कहीं असमानता देखने को मिलती है।

हिंदी और अवधी के वर्तमान काल में एकवचन तथा बहुवचन में लिंग प्रभावित होते रहते हैं। हिंदी के बहुवचन में अकर्मक और सकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाएँ कर्ता के लिंग से प्रभावित होती हैं, जबकि अवधी में कर्ता के लिंग का क्रिया पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। हिंदी के वर्तमान काल में 'ता' प्रत्यय तथा 'है' सहायक

क्रिया जुड़ती हैं। लेकिन अवधी में 'त' प्रत्यय ही प्रयुक्त होता है तथा इसके बाद अन्य सहायक क्रियाएँ प्रयुक्त होती हैं, जैसे-अहइ, अहिसि, अहउ, हइ, अहिन, अहै आदि। हिंदी में क्रिया रूप एकवचन तथा बहुवचन में लिंग से प्रभावित होते रहते हैं। लेकिन अवधी में मुख्य क्रिया पर लिंग, वचन, पुरुष का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

भूतकाल में हिंदी के मुख्य क्रिया रूप एकवचन और बहुवचन दोनों वचनों में तथा तीनों पुरुषों में लिंग से प्रभावित होते हैं। लेकिन अवधी के मुख्य क्रिया रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है केवल सहायक क्रियाएँ प्रभावित होती हैं। हिंदी के भविष्य काल में अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओं पर लिंग, वचन तथा पुरुष का प्रभाव पड़ता है, लेकिन अवधी में केवल वचन और पुरुष का ही प्रभाव पड़ता है अत: हम कह सकते हैं कि हिंदी में तीनों कालों के मुख्य क्रिया में परिवर्तन होता है, लेकिन अवधी में तीनों कालों के मुख्य क्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

हिंदी में नित्यताबोधक पक्ष के लिए मुख्य क्रिया में 'ता,ती,ते' प्रत्ययों तथा अवधी में 'त,ति' प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी के सात्ययबोधक पक्ष में सहायक क्रिया एक ही है- जैसे- रहा/रही/रहे आदि, लेकिन हिंदी में मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया का प्रयोग होता है तथा अवधी में मुख्य क्रिया से ही वाक्य पूर्ण हो जाता है।

हिंदी के आज्ञार्थक वृत्ति में 'तू' के लिए धातु (जा) के साथ (o), तुम के साथ 'ओ' 'ना' (तू जा, तुम जाओ/जाना) तथा आदर के लिए 'इए' (आप जाइए/जाइएगा आदि) का प्रयोग होता है। लेकिन अवधी में एकवचन में धातु रूप 'तु' (जा) के साथ (जा) तथा बहुवचन के लिए 'तु' (ए) के साथ (उ), (तु देखे रहु) आदि का प्रयोग होता है। संकेतार्थक वृत्ति में हिंदी में 'अ,आ' प्रत्यय तथा अवधी में 'त,ति,ती' आदि का प्रयोग होता है। हिंदी की मुख्य क्रिया को बहुवचन में प्रयोग करने के लिए 'ते हैं', जैसे- वे जाते हैं। (अ.पु.,पु.,ब.व.) लेकिन अवधी में उ सबकेउ जात अहै। (अ.पु.,पु.,ब.व.) आदि, यहाँ पर बहुवचन के लिए मुख्य क्रिया से पूर्व 'सबकेउ' का प्रयोग होता है।

अवधी में वर्तमान काल, सातत्य पक्ष, भविष्य काल आदि में लिंग की सूचना वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा वा सर्वनाम से मिलती है तथा अन्य पुरुष में भी लिंग की सूचना सर्वनाम से ही मिलती है। क्योंकि अवधी के अन्य पुरुष में एकवचन-बहुवचन तथा दोनों लिंगों के लिए एक ही सर्वनाम प्रयुक्त होता है।

अत: समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि हिंदी और अवधी दोनों भाषाओं की क्रिया संरचना में काल, पक्ष, वृत्ति के साथ-साथ लिंग, वचन, पुरुष आदि की दृष्टि से अनेक समानताएँ और असमानताएँ हैं। इसे समझने के लिए मुख्य क्रिया रूपों तथा सहायक क्रियाओं को अलग-अलग देख सकते हैं। दोनों भाषाओं में अलग-अलग रूप साधक प्रत्यय हैं। उनकी संख्या और प्रयोग में पर्याप्त अंतर है, जिन्हें प्रस्तुत लघु-शोध में दर्शाया गया है।

Summary of the Research

Language is the fundamental medium through which the person exchanges his ideas. For this we use essentially spoken sounds. The structure of each language is different, which makes it look different from all languages. Any language is bounded in some grammatical rules that we call the structure of language. In addition to independent study of the system of one language, comparative study of more than one languages may also be done. In this dissertation, the verb phrase of Hindi-Awadhi is being studied comparatively.

Sentence is the basic unit in terms of communication in language. The verb is centre element of the sentence. Most of the grammatical information in sentences is found through verb. There are two parts of the Verb- main verb and auxiliary verb. The main verb provides the lexical meaning, with which the grammatical information is found by auxiliary verb. Looking at Hindi and Awadhi verb phrases in terms of form, it is found that different suffixes and auxiliaries are not added for the information of each grammatical

category, but rather one or two suffixes are added and most of the grammatical information is expressed through the auxiliary verbs.

Therefore, we can compare this difference of language between sound, form and sentence in linguistics. On the basis of comparison, the knowledge of the nature of both languages is attained. All languages have their own grammatical system, in which the language is formed. In the contrastive analysis, the similarities and dissimilarities found at the level of sentence, form, sound etc. are analyzed. This helps in understanding both of the languages. In this way, similarities and dissimilarities of Tense, Aspect, Mood as well as gender, number, person etc. may be found in Hindi and Awadhi.

In the present tense of Hindi and Awadhi, gender is affected in singular and plural. In the plural form of Hindi, both intransitive and transitive verbs are influenced by the gender of the subject, whereas in the Awadhi, there is no effect of the gender of the subject to the verb. In the present tense in Hindi, 'ता' is suffix and auxiliary verb 'hai' are added. But in Awadhi only the suffix 't' is used, and after this many auxiliary verbs, such as Ahai, Ahisi, Ahu, Hai, Ahin, Ahai etc. are used. In Hindi singular and plural forms of Verb are influenced by gender, but there is no effect of gender, number and person on the main verb in Awadhi.

In Hindi, the main verb forms of verb are influenced in the singular and plural numbers, all the three persons by gender in past tense. But there is no change in the main verb form in Awadhi, only auxiliary verbs are affected. In the future tense of Hindi, the intransitive and transitive verbs are influenced by gender, number and person, but in Awadhi, only the number and person affects. Therefore we can say that the main verb is

changed in all the three tenses, while there is no change in main verb in three types of tense in Awadhi.

For Indefinite tense in Hindi the 'taa,tee,te' suffixes are added in main verb while in Awadhi, ta,ti' suffixes are used. There is only one auxiliary verb 'rahaa/rahee/rahe' for continuous aspect, in Hindi while in Awadhi the sentence is completed with only main verb.

In Hindi's imperative mood, zero suffix is added with root verb for 'too', 'o', naa' suffixes are used for 'tum' (you) (too jaa, tum jaao/jaanaa) and 'ie' is used for respect (aap jaayie'jaaiegaa etc.) But in Awadhi, in singular 'tu' (jaa), in plural 'tu' (e) and (u), (tu dekhe rahu) etc. are used. For Indexical mood in Hindi 'a, aa' suffixes and in Awadhi 'ta, ti' tee' suffixes are used. In Hindi 'te hain' is used for the plural form of main verb, i.e. 've jaate hain' (P3.M..Pl.) But in Awadhi, 'sabkeu' is used, such as- u sabkeu jaat ahai (P3.M.Pl.).

In Awadhi, in present tense, continuous aspect and future tense the information of gender is obtained from noun or pronoun and even in third person is the same. Because in the third person of Awadhi in singular-plural and both of the genders the same pronoun is used.

Therefore, we can say that in the verb structure of both Hindi and Awadhi languages there are many similarities and differences of Tense, Aspect and Mood along gender, number and person. To find out it we can see the main verb forms and the auxiliary verbs separately. Both of the languages have inflectional suffixes. There is considerable difference in their number and uses, which are depicted in this desertation.